

विशेष लेखन : स्वरूप और प्रकार

- विशेष लेखन
- किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन है ।
जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून विज्ञान और अन्य किसी भी महत्वपूर्ण विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं

डेस्क



- समाचारपत्र, पत्रिकाओं , टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं। और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है । यथा, व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है ।

बीट



- विभिन्न विषयों से जुड़े समाचारों के लिए संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अन्तर



- बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी व दिलचस्पी का होना पर्याप्त है, साथ ही उसे आम तौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। किन्तु विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर संबंधित विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों का बारीकी से

विश्लेषण कर प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहा जाता है।

विशेष लेखन की भाषा-शैली

- : विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।

विशेष लेखन के क्षेत्र



- विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र होते हैं,
- यथा-
- अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-
प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण
शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, कानून व
सामाजिक मुद्दे आदि

प्रश्न 1. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ?

उत्तर-सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ हैं जो इस प्रकार हैं-

सिनेमा और रंगमंच

1. सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है।
2. इनमें कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता
3. इनमें चरित्र होते हैं।
4. इनमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
5. इनमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान।
6. इनमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

रेडियो नाटक

1. रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है।
2. इसमें भी कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।
3. इसमें भी चरित्र होते हैं।
4. इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
5. इसमें भी पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और प्रस्तुत किया जाता है। समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
6. इनमें भी पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

प्रश्न 2. सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं ?

उत्तर-सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ होते हुए भी कुछ असमानताएँ अवश्य होती हैं जो इस प्रकार हैं-

सिनेमा और रंगमंच

1. सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम है।
2. इनमें दृश्य होते हैं।
3. इनमें मंच सज्जा और वस्त्र सज्जा का बहुत महत्त्व होता है।
4. इनमें पात्रों की भावभंगिमाएँ विशेष महत्त्व रखती हैं।
5. इनमें कहानी को पात्रों की भावनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

रेडियो नाटक

1. रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है।
2. इसमें दृश्य नहीं होते।
3. इसमें इनका कोई महत्त्व नहीं होता।
4. इसमें भावभंगिमाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती।
5. इसमें कहानी को ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।

प्रश्न 3. रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

उत्तर-रेडियो नाटक में कहानी संवादों तथा ध्वनि प्रभावों पर ही आधारित होती है। इसमें कहानी का चयन करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं

1. कहानी एक घटना प्रधान न हो-रेडियो नाटक की कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि ऐसी कहानी श्रोताओं को थोड़ी देर में ही ऊबाऊ बना देती है जिसे श्रोता कुछ देर पश्चात् सुनना पसंद नहीं करते इसलिए रेडियो नाटक की कहानी में अनेक घटनाएँ होनी चाहिए।

2. अवधि सीमा-सामान्य रूप से रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक हो सकती है। रेडियो नाटक की अवधि इससे अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि रेडियो नाटक को सुनने के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट तक की होती है, इससे ज्यादा नहीं। दूसरे रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसे मनुष्य अपने घर में अपनी इच्छा अनुसार सुनता है। इसलिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित होनी चाहिए।

3. पात्रों की सीमित संख्या-रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। इसमें पात्रों की संख्या 5- 6 से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें याद नहीं रख सकेंगे। इसलिए रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए।

प्रश्न 4. रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का क्या महत्त्व है ?

अथवा

रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं-

1. रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारीयाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।
2. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं।
3. नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
4. इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।
5. संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है।
6. संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

प्रश्न 5. रेडियो पर रेडियो नाटक का आरंभ

किस प्रकार हुआ ?

उत्तर-आज से कुछ दशक पहले रेडियो ही मनोरंजन का प्रमुख साधन था। उस समय टेलीविज़न, सिनेमा, कम्प्यूटर आदि मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं थे। ऐसे समय में घर बैठे ही रेडियो ही मनोरंजन का सबसे सस्ता और सुलभ साधन था। रेडियो पर खबरें आती थीं इसके साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते थे। रेडियो पर संगीत और खेलों का आँखों देखा हाल प्रसारित किया जाता था। एफ० एम० चैनलों की तरह गीत-संगीत की अधिकता होती थी। धीरे-धीरे रेडियो पर नाटक भी प्रस्तुत किये जाने लगे तब रेडियो नाटक टी० वी० धारावाहिकों तथा टेली फिल्मों की कमी को पूरा करने के लिए शुरू हुए थे। ये नाटक लघु भी होते थे और धारावाहिक के रूप भी प्रस्तुत किए जाते थे।

हिन्दी साहित्य के सभी बड़े-बड़े लेखक साहित्य रचना के साथ-साथ रेडियो स्टेशनों के लिए नाटक भी लिखते थे। उस समय रेडियो के लिए नाटक लिखना एक सम्मानजनक बात मानी जाती थी। इस प्रकार रेडियो नाटक का प्रचलन बढ़ने लगा। रेडियो नाटकों ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्य आंदोलन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। हिंदी के अनेक नाटक जो बाद में मंच पर बहुत प्रसिद्ध रहे वे मूलतः रेडियो के लिए ही लिखे गए थे। धर्मवीर भारतीय द्वारा रचित 'अंधा युग' और मोहन राकेश द्वारा रचित 'आषाढ़ का एक दिन' इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

प्रश्न 6. रेडियो नाटक के तत्वों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

उत्तर-रेडियो नाटक का मूल आधार ध्वनि मानी जाती है। यह मानवीय भावों को सरलता-सहजता से व्यक्त कर देने की क्षमता रखती है। रेडियो तत्वों के तीन तत्व माने जाते हैं।
उनके तत्व हैं-(1) भाषा (2) ध्वनि प्रभाव (3) संगीत।

1. **भाषा**-भाषा ही रेडियो नाटक की मूल आधार होती है। यही सुनने और बोलने का कार्य करती है। इसी से कठिन एवं जटिल रेडियो नाटक और संवाद जटिल हो जाते हैं। इसे जिन तीन भागों में स्वीकार किया जाता है, वे हैं-

(क) कथोपकथन (ख) नरेशन (वक्ता का कथन) (ग) कथन।

(क) **कथोपकथन**-रेडियो से दो प्रमुख संबंधित तत्व होते हैं-कथोपकथन और प्रवक्ता का कथन। कथोपकथन रेडियो को पात्रों की मानसिक स्थितियों को प्रकट कराते हैं और कथानक उसे गति प्रदान करता है। यही रेडियो के नाटक के पात्रों और उन की मानसिक स्थितियों का परिचय कराते हैं। इन्हीं से कथानक को गति प्राप्त होती है और श्रोता को अपनी ओर आकृष्ट करती है। नरेशन ही पाठकों के क्रिया-कलापों का निर्माण प्रदान करता है और विभिन्न घटनाओं/विवशताओं/श्रृंखला में बांधने का कार्य करता है।

(ख) **ध्वनि प्रभाव**-ध्वनि तरह-तरह की वातावरणों को बनाने में सहायक बनाती है। तूफान, बादल, बाज़ार आदि इन्हीं से प्रसारण के माध्यम से इधर-उधर प्रसारित करती है। इनकी सहायता से रेडियो नाटकों की वातावरण की सृष्टि होती है।

(ग) **संगीत**-यह रेडियो-नाटक को संजीवता प्रदान करने का कार्य करता है जिससे प्रभावित की सृष्टि होती है। संगीत से प्रभाविता की क्षमता बढ़ती है।

अति महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं ?

उत्तर-कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें जहाँ कुछ समानताएँ हैं, वहाँ कुछ असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार हैं-

कहानी

1. कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है।
2. कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।
3. कहानी कहीं अथवा पढ़ी जाती है।
4. कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बांटा जाता है।
5. कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का महत्त्व नहीं है।

नाटक

1. नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है।
2. नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।
3. नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।
4. नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।
5. नाटक में मंच सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।

प्रश्न 1. कहानी और नाटक में क्या समानता होती है ?

उत्तर-कहानी और नाटक में निम्नलिखित समानताएं हैं-

कहानी

1. कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है।
2. कहानी में एक कहानी होती है।
3. कहानी में पात्र होते हैं।
4. कहानी में परिवेश होते हैं।
5. कहानी का क्रमिक विकास होता है।
6. कहानी में संवाद होते हैं।
7. कहानी में पात्रों के मध्यम द्वंद्व होता है।
8. कहानी में एक उद्देश्य निहित होता है।
9. कहानी का चरमोत्कर्ष होता है।

नाटक

1. नाटक का केंद्र बिंदु कथानक होता है।
2. नाटक में भी एक कहानी होती है।
3. नाटक में भी पात्र होते हैं।
4. नाटक में भी परिवेश होता है।
5. नाटक का भी क्रमिक विकास होता है।
6. नाटक में भी संवाद होते हैं।
7. नाटक में भी पात्रों के मध्य द्वंद्व होता है।
8. नाटक में भी एक उद्देश्य निहित होता है।
9. नाटक का भी चरमोत्कर्ष होता है।

प्रश्न 2. कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ?

उत्तर-कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।
2. कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।
3. कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
4. ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।
6. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।
7. संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।
8. कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

प्रश्न 3. नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार की मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है ?

अथवा

नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं ?

उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है-

1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।
2. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।
3. संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।
4. संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।
5. कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

प्रश्न 4. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर-कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
2. नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।
3. नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।

4. कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।

5. संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावशैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

6. संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।

प्रश्न 5. कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार परिवर्तित किये जा सकते हैं ?

उत्तर-कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में निम्न प्रकार से परिवर्तित किये जा सकते हैं-

1. नाट्य रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता का नाटक के पात्रों से मेल होना चाहिए।

2. पात्रों की भावभंगिमाओं तथा उनके व्यवहार का भी उचित ध्यान रखना चाहिए।

3. पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।

4. पात्र अभिनय के अनुरूप होने चाहिए।

5. पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए।

प्रश्न 6. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं ?

उत्तर-कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार करते हैं-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
2. प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।
3. एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।
4. दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।
5. दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

पत्रकारीय लेखन-

- समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारिता या पत्रकारीय लेखन के अन्तर्गत सम्पादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट, फ़ीचर, स्तम्भ तथा कार्टून आदि आते हैं।
- पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य है- सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन आदि करना। इसके कई प्रकार हैं यथा- खोज परक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एड्वाकैसी पत्रकारिता आदि।
- पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है। पत्रकार को लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए वह सामान्य जनता के लिए लिख रहा है, इसलिए उसकी भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे व सहज हों। कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों,
- **और क्लिंशे (पिष्टोक्ति, दोहराव)** का प्रयोग नहीं होना चाहिए

पत्रकार के प्रकार

- पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं ।
- १. पूर्ण कालिक- यह किसी समाचार संगठन में काम करनेवाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है
- २. अंशकालिक (स्ट्रिंगर) - यह किसी समाचार संगठन में निश्चित मानदेय पर काम करनेवाला कर्मचारी होता है
- ३. स्वतंत्र पत्रकार या फ्रीलांसर —इसका सम्बन्ध किसी खास अखबार से नहीं होता बल्कि यह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है ।
- अखबारों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार लिखते हैं जिन्हें संवाददाता या रिपोर्टर कहते हैं

समाचार लेखन

- समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह युद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्वपूर्ण घटना का वर्णन सबसे पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है।
- समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

उलटा पिरामिड शैली



उलटा पिरामिड शैली

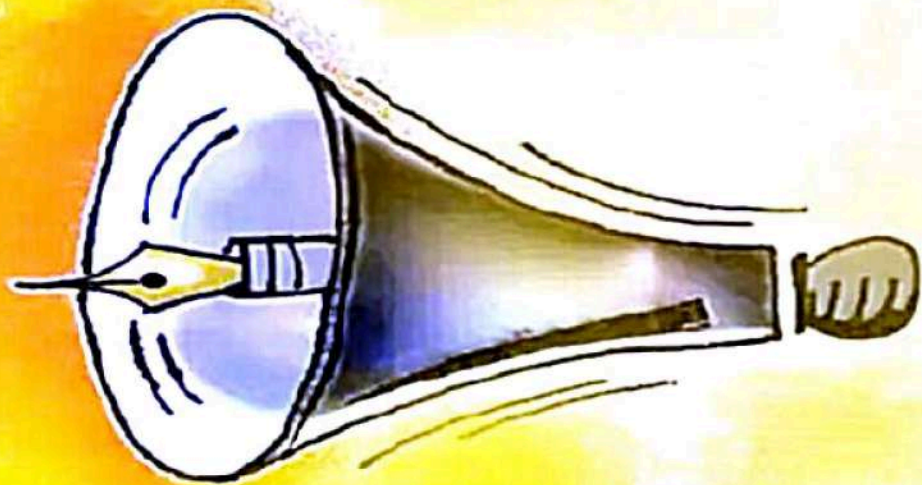
ऐतिहासिक विकास

इस सिद्धांत का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से शुरू हो गया था, लेकिन इसका विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान हुआ था। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ संदेश के जरिए भेजनी पड़ती थी, जिसकी सेवाएँ अनियमित, महँगी और दुर्लभ थी। यही नहीं कई बार तकनीकी कारणों से टेलीग्राफ सेवाओं में बाधा भी आ जाती थी। इसलिए संवाददाताओं को किसी खबर को कहानी के रूप में लिखने के बजाय संक्षेप में बतानी होती थी और उसमें भी सबसे महत्वपूर्ण तथ्य और सूचनाओं की जानकारी पहली कुछ लाइनों में ही देनी पड़ती थी। धीरे-धीरे समाचार लेखन का यही सिद्धांत लोकप्रिय हो गया क्योंकि आज के व्यस्ततम दुनिया में सभी कम समय ज़्यादा काम की अपेक्षा रखते हैं।

समाचार के छः ककार-

- समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छः प्रश्नों- **क्या, कौन, कहाँ, कब , क्यों और कैसे** का उत्तर देने की कोशिश की जाती है।
- इन्हें समाचार के छः ककार कहा जाता है।
- प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं ।
- इनमें से पहले 4 ककार **क्या, कौन, कहाँ, कब सूचना और तथ्यों पर आधारित होते हैं**
- बाकी दो ककारों — **क्यों और कैसे** में विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है

क्या
कौन
कहाँ
कब
क्यों
किस



फीचर लेखन

- 'फीचर' को अंग्रेजी शब्द **Feature** (फीचर) का पर्याय कहा जाता है। फीचर शब्द को हिंदी में "रूपक" कहा जाता है। लेकिन आम भाषा में फीचर को ज्यादातर लोग फीचर ही कहते हैं। फीचर का अर्थ होता है— "किसी प्रकरण संबंधी **(Sectional)** विषय पर प्रकाशित आलेख है।
- फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।
- **फीचर लेखन का उद्देश्य:** फीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है।
- फीचर को शब्द चित्र कहा जा सकता है। फीचर लेख एक ऐसा शब्द चित्र होता है। जिसमें तथ्यों का स्पष्ट एवं प्रभावशाली विश्लेषण होता है।

एक अच्छे फीचर लेखन की विशेषता

- फीचर मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, मानवीय रुचि पर आधारित होना चाहिए।
- चित्रात्मक भाषा शैली होनी चाहिए।
- कल्पना का समावेश भी आवश्यक है।
- तथ्य व उनके प्रभाव सही हो , आंकड़ा सही हो अन्यथा झूठा वह अविश्वसनीय माना जाता है। इसलिए तथ्य ठीक रहना चाहिए।
- ज्ञान व भावना , संवेदना जगाने की कला है भी निहित हो।

एक अच्छे फीचर लेखन की विशेषता

- फीचर लेखन का कोई निश्चित ढांचा नहीं है फिर भी ज्यादातर यह कथात्मक शैली में लिखा जाता है |
- फीचर की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक, और मन को छूनेवाली होती है
- एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ फोटो , रेखांकन , कार्टून , ग्राफिक्स का होना जरूरी है
- फीचर को मनोरंजक के साथ-साथ सूचनात्मक होना चाहिए
- पाठकों को पढ़ते समय ऐसा महसूस हो जैसे वे घटना को देख रहे हों

फीचर लेखन और लेख में अंतर

- लेख और फीचर लेखन में बहुत कुछ समानताएं होती हैं , लेकिन फिर भी इन दोनों का अपना अलग अस्तित्व होता है।
- दोनों में एक समानता यह होती है , कि दोनों की लेखन शैली समाचार लेखन से पूर्णता भिन्न होती है।
- फीचर के लिए विशेष तौर पर अनुभूतियों , भावनाओं , अवलोकन तथा कल्पनाशीलता की आवश्यकता होती है।
- फीचर को मजेदार दिलचस्प और दिल पकड़ होना चाहिए।
- लेख हमें शिक्षा देता है , जबकि फीचर हमारा मनोरंजन करता है।
- फीचर में हास्य व कल्पना का भी सहारा लिया जाता है।

फीचर और आलेख में अंतर

- आलेख गंभीर व व्यंगपूर्ण होता है जबकि फीचर में हास्य और मनोरंजना
- फीचर 250 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए जबकि आलेख बड़ा भी हो सकता है।
- आलेख को संपूर्ण जानकारी और तथ्यों के आधार पर भी लिख सकते हैं, जबकि फीचर के लिए आपको आंख, कान, भाव, अनुभूतियां और मनोवेग, आदि की सहायता लेनी पड़ती है।
- फीचर विषय से संबंधित व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित विशिष्ट आलेख होता है जिसमें कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल होनी चाहिए जबकि आलेख में विषय पर तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक अथवा विचारात्मक जानकारी होती है कल्पना का स्थान नहीं होता है।

फ़ीचर और समाचार में अंतर

- : समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फ़ीचर में लेखक को अपनी राय , दृष्टिकोण और भवनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है । समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फ़ीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती । फ़ीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फ़ीचर, समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं । पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः २५० से २००० शब्दों तक के फ़ीचर छपते हैं ।

विशेष रिपोर्ट

- : सामान्य समाचारों से अलग वे विशेष समाचार जो गहरी छान-बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किये जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं।
- विशेष रिपोर्ट के प्रकार:
- (१) खोजी रिपोर्ट : इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन कर सार्वजनिक किया जाता है।
- (२) इन्डेप्ट रिपोर्ट: सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान-बीन कर उसके महत्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है।
- (३) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है। रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किस्तों में प्रकाशित की जाती है।
- (४) विवरणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

विचारपरक लेखन

- _: समाचार-पत्रों में समाचार एवं फ़ीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तम्भ छपते हैं। ये सभी विचारपरक लेखन के अन्तर्गत आते हैं।

संपादकीय :

- संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारत्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं। संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

स्तम्भ लेखन

- एक प्रकार का विचारत्मक लेखन है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचरपत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तम्भ - लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं। इस प्रकार किसी समाचार-पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट एवम नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली एवम वैचारिक रुझान के कारण समाज में ख्याति प्राप्त हो, स्तम्भ लेखन कहा जाता है

संपादक के नाम पत्र

- समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। यह प्रत्येक समाचारपत्र का नियमित स्तम्भ होता है। इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवम राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

साक्षात्कार/इंटरव्यू:

- किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचारपत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है ।